Annexure – VII

UNIVERSITY GRANTS COMMISSION

BAHADUR SHAH ZAFAR MARG

NEW DELHI – 110 002

PROFORMA FOR SUBMISSION OF INFORMATION AT THE TIME OF SENDING THE FINAL REPORT OF THE WORK DONE ON THE PROJECT

1. Title of the Project: **"वैदिक वाङ्मय में राष्ट्रिय चेतना तुलनात्मक अध्ययन"**

2. Name and Address of the Principal Investigator: **Mr. Rajendraprasad Kishanrao Arya**

3. Name and Address of the Institution**: Rajarshi Shahu Mahavidyalaya (Autonomous), Chandra Nagar, Latur 413512**

4. UGC Approval Letter No. and Date: File No.23-339/12/ (WRO) dated 20.02.2013

5. Date of Implementation: **01.04.2013**

6. Tenure of the Project : 01.04.2013 to 31.03.2015

7. Total Grant Allocated : **Rs.120000 /-** (Rupees One lakh twenty Thousand only)

8. Total Grant Received : **Rs.95000/-** (Rupees ninety five Thousand only

9. Final Expenditure : **Rs….**

10. Title of the Project: **"वैदिक वाङ्मय में राष्ट्रिय चेतना तुलनात्मक अध्यायन"**

11. Objectives of the Project –

भारत में कुछ लोग भारत देश से अलग होने की बात करते हैं उसके लिये वे लोग अनेक प्रकार के आंदोलनो के माध्यम से हिसक प्रकारो का अवलंबन करके जनमानस व सरकार को बाध्य करते है । इस अलगाववाद की भावना को दूर करने के लिये अपने देशवासियो मे राष्ट्रीय एकता, राष्ट्रप्रेम, राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना व देशप्रेम स्वाभिमान आत्मबलिदान की भावना आदि जागृत करने के लिये गंभीरता से विश्लेषण करना है । यह इस संशोधन प्रकल्प का मुख्य उद्धेश्य था ।

वेद विश्व साहित्य की प्राचीन अनमोल धरोहर है। भारतीय व पाश्चात्य विद्वानों में वेद की रचना व काल के बारे में विविध मत मतान्तर हैं।

वेदों में केवल आध्यात्मिक ही नहीं अपितु जीवन से निगडित प्रत्येक विषय का स्पर्श किया गया है। जिसमें यज्ञ, ब्रह्मविद्या, अलग-अलग देवताओं की स्तुति, रोग, दार्शनिक विषय, विविध संवाद सूक्त, सामगान न्यायव्यवस्था आदि के साथ राष्ट्रप्रेम, राष्ट्रचेतना व उसको प्रेरित करने के लिए

अनेक ऋषियों ने अनेको मन्त्रों का दर्शन कर भावी पीढी के लिए एक शुभ संकल्प देने का उत्कृष्ट प्रयत्न किया है। चार वेदों में राष्ट्रप्रेम चेतना के बारे में सबसे ज्यादा अथर्ववेद में इसज्ञा वर्ज-ा ज्िया गया है। अथर्ववेद का भूमि सूक्त इन सबमें सबसे ज्यादा अवलोकन योग्य है।

भूमि सूक्त में नदी, समुद्र, पर्वत, भूमि आदि का वर्णन करते हुए इस मातृभूमि के प्रति प्रजा, राजा, अधिकारी, सेवक, सैनिक आदि लोगों के क्या-क्या कर्तव्य हैं। इन सबके बारे में विस्तार से वर्णन है। हम सब लोगों में क्षत्र, शक्ति, तप, ब्रह्म शक्ति, सत्य आदि को धारण करनेवाले हम हों। हमारे देश की तरफ किसी ने भी ुदृष्टि की तो हम उसको नष्ट करनेवाले वीर प्रजाजन हों ऐसी उदात्त प्रार्थना है। भूमि सूक्त का **"माता भूमि: पुत्रोऽ हं पृथिव्या:"** अर्थात हे भूमाते! तू मेरी माता है और मैं तेरा पुत्र हूँ। इसी का प्रभाव आजे **"जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी"** अर्थात माता और मातृभूमि ये दोनों भी स्वर्ग से भी महान है। वैदिक साहित्य के विचारों का समयानुसार वैदिक व लौकिक साहित्य की विविध साहित्य प्रकारों में हमें देखने को मिलता है। जब भारत में अंग्रेजों का राज्य था उस समय श्री पं. अबिकादत्त व्यास, पं. क्षमाराव, श्री मथुरा प्रसाद दीक्षित, आचार्य चारुदेव शास्त्री आदि ऐसे अनेक विद्वान हैं जिन्होंने राष्ट्रचेतना बढाने के लिए अपने साहित्य द्वारा अपना विशिष्ट योगदान दिया है।

हमारी भारतीय परंपरा ज्ञान की उपासक है। इसी का प्रतिबिंब हमें हिन्दी व भारत की अनेक भाषाओं में देखने को मिलता है। भारत के अलग-अलग भागों में रवीन्द्रनाथ टैगोर, बंकिमचन्द्र, सुब्रह्मण्य भारती, माखनलाल चतुर्वेदी, मैथिलीशरण गुप्ता, रामधारी सिंह, दिनकर आदि प्रमुख हैं। जिनके विविध साहित्य रचनाओं का राष्ट्र चेतना वृद्धिंगत करने के लिए उनका उस-उस काल अमूल्य योगदान है।

भारत वर्ष खूब प्राचीन राष्ट्र है। आज तक भारत पर हूण, शक, यवन, अंग्रेज आदि विदेशियों ने अनेक बार आक्रमण किया व इसको अनेकों वर्ष तक गुलाम बनाये रखा तब भी अनेक परिवर्तन होने के बावजूद भारत की राष्ट्रीयता, राष्ट्रीय भावना आज तक चली आ रही है। कोई भी आंधी, तूफान उसके चमक को कम नहीं कर सका। इसी बात को ध्यान में रखकर उर्दू कवि इकबाल ने ज्हा है- "कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी" यह उपर्युक्त पंक्ति कहकर हमारी राष्ट्रीयता की ओर संकेत किया है। हमरी राष्ट्रीय पहचान हमारी सभ्यता, संस्कृति हमारे जीवन दर्शन में है।

राष्ट्र शब्द की व्युत्पत्ति 'चमकना' अर्थवाली राज् धातू से हुई है। जिसमें औणादिक 'ष्ट्रन्' प्रत्यय जोडा गया है। उसके अनुसार इसका अर्थ है **"राजते दीप्यते प्रकाशते शोभति इति राष्ट्रम्"** अर्थात जो स्वयं देदीप्यमान होनेवाला है वह राष्ट्र कहलाता है। अथवा विविध वैभवों से सुशोभित देश 'राष्ट्र' ज्हलाता है। अच्छी प्रकार से शासित किए गये भूभाग वो ही राष्ट्र संज्ञा दी जा सकती है।

मोनिअर विलियम्स ने 'ए संस्कृत इंग्लिश डिक्शनरी' में राष्ट्र शब्द के कई अर्थ दिए है- Kingdom, Realm, Empire, Dominion, District, Country, People, Nation और Subject है। इसी प्रकार से लगभग श्री वामन शिवराम आप्टे ने भी संस्कृत इंग्लिश डिक्शनरी में लगभग यह ही अर्थ किया है। 'मानक हिन्दी कोश' में राष्ट्र शब्द का अर्थ राज्य, देश किसी निश्चित और विशिष्ट क्षेत्र में रहनेवाले लोग जिनकी एक भाषा एक से रीतिरिवाज तथा एक सी विचारधारा होती है। तथा किसी एक शासन में रहनेवाले सब लोगों का समूह किया गया है।

संस्कृत के कोश ग्रन्थों में राष्ट्र शब्द के अर्थ में विविधता दिखाई देती है। पहले यह शब्द व्यापक अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। इससे ज्भी जनपद, विषय, देश, भूमि का अभिप्राय लिया गया है। कभी-ज्भी इस नाम से उसमें रहनेवाले लोगों का तात्पर्य ग्रहण किया गया है। **"राजते तत् राष्ट्रम्"** इस व्युत्पत्ति से संकेत मिलता है कि वह भूभाग या जनसमुदाय जो सर्वतन्त्र स्वतन्त्र हो जो किसी से दबाया न जा गया हो वह राष्ट्र कहलाता है। अलग-अलग भाषाओं में भले ही राष्ट्र शब्द के अलग-अलग अर्थ हों तब भी आज सर्वसामान्य रुप से राष्ट्र शब्द अंग्रेजी का Nation का और राष्ट्रीयता शब्द इंग्लिश शब्द Nationality का रूपान्तर माना जाता है।

विश्व के प्राचीनतम वैदिक साहित्य वेदों में राष्ट्र शब्द का प्रयोग हमें देखने को मिलता है। ऋग्वेद में **"राष्ट्रं क्षत्रियस्य"** ऋग्-४-४२-१ में "राजा राष्ट्रानाम्" ऋग्-७-३४-११ **"राष्ट्रं गुपितं जत्रियस्य"** ऋग्-१०-१०९-३ आदि संदर्भों से ज्ञात होता है कि क्षत्रिय के द्वारा शासित भूभाग को राष्ट्र कहते हैं।

यजुर्वेद के दशम अध्याय में राष्ट्र शब्द का प्रयोग अनेक बार हुआ है। जैसे- **"वृषसे-गो s सि राष्ट्रदा राष्ट्रम्मुष्मैदेहि, राष्ट्रदा राष्ट्रं में देहि"** यजुर्वेद १०/२/३ अर्थात तू बल को बढानेवाला है और राष्ट्र देनेवाला है उसे राष्ट्र दो एवं तू राष्ट्र देनेवाला है मुझे राष्ट्र दो। यजुर्वेद के ही एक अन्य मन्त्र में राष्ट्र में न केवल सब प्रकार के लोगों की अपितु पशु और वनस्पति की भी पुष्टि की कामना की

जई है, जिससे राष्ट्र के व्यापक रूप का आभास मिलता है।

अथर्ववेद के राष्ट्राभिवर्धन सूक्त में राष्ट्र की वृद्धि के लिए राजा द्वारा अभीवर्त मणि बांधने की प्रार्थ-ाा है- **"तेनास्मान् ब्रह्मण स्पतेऽपि राष्ट्राय वर्धय"** अथर्ववेद १-२९-१ जिससे तात्पर्य है कि राजा को राष्ट्र की उन्नति और सुरक्षा के लिए क्या-क्या करना चाहिए। इसको यहाँ प्रतीक रुप में बताया गया है।

डॉ. सूर्यकांत ने 'वैदिक कोश' में राष्ट्र का अर्थ बताते हुए कहा है कि- ऋग्वेद और उसके बाद जे ग्रन्थों में राज्य या राजकीय क्षेत्र को राष्ट्र कहा गया है।

ज्ीथ और मैकडॉनल ने अपने वैदिक इण्डेक्स में कहा है- **"राष्ट्र शब्द ऋग्वेद और उसके बाद के ग्रन्थों में राज्य अथवा साम्राज्य का द्योतक है।"**

ब्राह्मज ग्रन्थों ने अपनी शैली में राष्ट्र शब्द की इस तरह व्याख्या की है- **"राष्ट्राणि वै विशः"** ऐतरेय ब्राह्मण ८-२६ **'क्षत्रं हि राष्ट्रम्'** ऐतरेय ब्राह्मण ७-२२ राष्ट्रं मुष्टिः शतपथ ब्राह्मण १३-२-९-७. **'सविता राष्ट्रं राष्ट्रपतिः'** शतपथ ब्राह्मज ११-४-३-१४ **श्री वैः राष्ट्रम्** शतपथ ब्राह्मण ६-७-३-७।

इन सब उपरोक्त वाक्यों के अनुसार राष्ट्र जनसमूह है, राष्ट्र शक्ति है, राष्ट्र सविता है, राष्ट्र श्री है आदि। इनसे एक राष्ट्र में सुरक्षित और समूह जनसमुदाय की प्रतीति होती है।

अथर्ववेद में राष्ट्र शब्द का प्रयोग अनेक स्थानों पर किया गया है। वैदिक मन्त्रों से राष्ट्र का प्रादेशिक और जनजातीय स्वरूप प्रकाश में आता है जिसमें कई अमूर्त तत्त्व जैसे श्री, क्षत्र आदि का होना अनिवार्य माना गया है। अतएव समृद्धियुक्त, ओजस्वी और शक्तिसम्पन्न जनसमूह ही राष्ट्र बनाता है।

वैदिक सन्दर्भो के विवेचन द्वारा प्राचीन भारतीय दृष्टिकोण से राष्ट्र शब्द के अर्थ स्पष्ट होते हैं और उसके स्वरुप, आधार, धारक गुण और प्रमुख तत्त्वों आदि के संकेत मिलते हैं।

निरुक्त में भास्कराचार्यजी ने- **"तत्र संस्थान एकत्व सम्भोग एकत्वं च उपेक्षितव्यम्। तत्र एतत् नर राष्ट्रमिव"** निरुक्त ७-५-८-९ अर्थात भिन्न-भिन्न मनुष्यों के स्थान तथा उपभोग की एकता को राष्ट्र के लिए आवश्यक बताया है।

मनुस्मृति के सातवे अध्याय में राष्ट्र शब्द जिसमें एक शासकीय राज्य के भूभाग का बोध होता है जिसकी सुरक्षा व्यवस्था राजा के अधीन हो।

लौकिक संस्कृत साहित्य के इतिहास पुराण और अन्य काव्य ग्रन्थों में राष्ट्र के लिए भारत या भारतवर्ष नाम का प्रयोग हुआ है। आधुनिक राजनीतिशास्त्री और चिन्तकों ने राष्ट्र शब्द को एक पारिभाषिक शब्द माना है। इन विद्वानों के द्वारा दी गई परिभाषायें एक समान नहीं है। तो भी कुछ प्रमुख विद्वानों की परिभाषायें इस प्रकार से हैं- बर्गेस के अनुसार राष्ट्र जातीय एकता के सूत्र में बंधी हुई वह जनता है जो अखण्ड भौगोलिक प्रदेश में निवास करती है।

बार्कर के अनुसार- राष्ट्र ऐसे व्यक्तियों का समुदाय है जो निश्चित प्रदेश में निवास करते हों और जिनमें एक ही भूमि पर निवास ज्रने के कारण परस्पर प्रेम हो।

वासुदेव शरण अग्रवाल ने भूमि, भूमि पर बसने वाला जन और जन की संस्कृति इन तीनों के सम्मिलन से राष्ट्र का स्वरुप बनता है। इस प्रकार बीसवी सदी हिन्दी के मानक निबन्ध भाग एक में कही है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि राष्ट्र शब्द के बारे में विद्वानों में एकमत नहीं है। उन्होंने राष्ट्र के ज्ि-ही-किन्ही विशेष तत्वों पर बल देते हुए अपने-अपने ढंग से उसे पारिभाषित करने ज्ा प्रयास किया है।

मूर्त और अमूर्त दो रुपों में राष्ट्र की अवधारणा पर चर्चा करते समय इस पर विचार किया जाता है। जो रुप दिखाई पडता है या देखा जा सकता है उसे मूर्त रूप कहा जाता है। जो रुप दिखाई नही पडता है पर जिसका अस्तित्व महत्त्वपूर्ण है। राष्ट्र का आधार भूखण्ड अर्थात जिसकी भूसीमा निर्धारित है। जिसके अन्तर्गत नदी, पर्वत, सागर, वन, उपवन, ऋतूए, प्राचीन पुरातत्व अवशेष, तीर्थस्थल, नज्र, भवन और समस्त भौगोलिक परिवेश सम्मिलित है। अनेक वर्षों से वहाँ निवास करने के कारण सब लोगों में आपस में प्रेम उत्पन्न हो जाता है। इस प्रकार की एकता के कारण सब लोगों में प्रेम उत्पन्न हो जाने के कारण उन सबमें राष्ट्रीय चेतना जागृत होकर वहाँ के नागरिक अपने देश की रक्षा हेतु तन-म-ा-धन सब अर्पण करते हैं।

राष्ट्र के अमूर्त रुप के अन्तर्गत मुख्य रुप से उस राष्ट्र के लोगों की अन्तरगता, उनकी संस्कृति, परम्परा, भाषा, चिन्तन धारा, साहित्यिक उपलब्धि, गौरव भावना, समस्या आदि का समावेश किया जाता है। राष्ट्रप्रेम, राष्ट्र भक्ति रुपी चेतना जागृत करने के लिए राष्ट्र के मूर्त और अमूर्त दो-ों रुपों के प्रति राष्ट्रवासियों की प्रेम और सम्मान की भावनायें अपेक्षित हैं।

राष्ट्रीय चेतना - अथर्ववेद के भूमि सूक्त में राजनीति शास्त्र तथा समाजशास्त्र के परिप्रेक्ष्य में वैदिक संस्कृति की मनोहारी झांकी प्रस्तुत की गई है। वेदों में सिर्फ उपासना और इतिहास ही नही है। अपितु राजा और प्रजा के धर्म पर भी विचार किया गया है सायण, महीधर, उव्वट आदि आचार्यों ने वेदों के अर्थ यज्ञ परक अध्यात्मिक अर्थ किये हैं। महर्षि दयानंद सरस्वती ऐसे पहले विद्वान हैं जिन्होंने व्यावहारिक जीवनोपयोगी ज्ञा-ा विज्ञान को जोडने वाला अर्थ किया है।

मनुस्मृति में राष्ट्र नेतृत्व के संदर्भ में यह कहा गया है _____

सेनापत्यं च राज्यं च दण्डनेतृत्वमेव च।

सर्वलोकाधित्यं च वेदशास्त्र विर्दहति ।।

म-ा. १२ - १००

अर्थात जो वेदशास्त्र को जानने वाला व्यक्ति सेनापत्य अर्थात सेनाओं का संघटन और संचालन कर सकता है, दण्ड नेतृत्व और न्याय व्यवस्था का संचालन कर सकता है और सर्व लोकाधिपत्य अर्थात सारे भूमण्डल के चक्रवर्ती राज्य का संचालन कर सकता है।

श्री स्वामी गंगेश्वरा नंदजी उदासीन ने "विश्वतोमुख भगवान वेद" नामक पुस्तक के पृ. २४३ में लिखा है कि विश्व एक महान राज्य है जिसमें भिन्न - भिन्न विभागों के अधिकारी मन्त्रिगण अपने - अपने विभागों को कुशलता से चलाते हैं। जैसे आज के प्रजातन्त्र के शासन में राष्ट्रपति , लोकसभा अध्यक्ष , प्रधानमन्त्री, अन्य मन्त्रिगण अपने - अपने रक्षा, स्वास्थ, शिक्षा आदि मन्त्रालय चलाते हैं।

विदेशी विद्वानों की प्राय: यह धारणा रही है कि राजनीतिशास्त्र तथा समाजशास्त्र का आगमन भारत में बाहर के देशों से हुआ है। सर्वप्रथम डॉ. काशीप्रसाद जायसवाल ने हिन्दू राजतन्त्र लिखकर इन बातों का खंडन किया है। संस्कृत में मनुस्मृति, महाभारत, कौटिलीय अर्थशास्त्र, कामन्दक नीतिसार, शुक्रनीति, विदुरनीति, राजधर्म काण्ड, राजनीति रत्नाकर जैसे ग्रन्थों में भारतीय राजनिती विषयक सिद्धांतो का पता चलता है।

डॉ. ए. एस. अल्तेर कृत प्राचीन शासन पद्धती, दीक्षितार की - हिन्दू एडमिनिस्ट्रेटिव इंन्स्टीट्यूशन्स आदि ग्रंथ भी प्राचीन शासन पद्धति पर लिखे गये है।

वेद में राजनीति, प्रशासन आदि के बारे क्रमबद्ध ढंग से प्रकाश न डालकर उसको प्राय: इधर - उधर वर्णित किया गया है।

डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल ने सर्वप्रथम **"पाणिनी कालीन भारतवर्ष"** -ामज ब्र-थ में वारिपथ, स्थल पथ, रथपथ, ज रिपथ, अजपथ, शंकुपथ, राजपथ, सिंहपथ, हंस पथ, का उल्लेख किया है। पहाडी किन्तु संकीर्ण मार्ग अजापथ तथा शंकुपथ कहलाते थे।

16. Whether Any Ph.D. Enrolled / Produced Out Of the Project

17. No. Of Publications Out of the Project …01 Papers Published

(Please Attach)

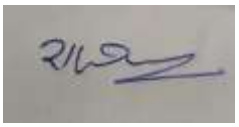

Principal Investigator

Pricipal